डॉलर का घटता प्रभुत्व

आइए साम्राज्य के अंतिम संस्कार की तैयारी करें

रेयाज–उल–हक

'द इकोनॉमिस्ट' भले ही इस बात पर खुशी जाहिर कर रहा हो कि डॉलर अभी ध्वस्त नहीं होने जा रहा है. मगर यह एक विश्व मुद्रा के लिए बहुत अच्छे संकेत नहीं हैं कि वह एक मॉड्ल के पारिश्रमिक भुगतान में असमर्थ साबित हो. ब्राजील की सुपर मॉड्ल गीसेल अब डॉलर स्वीकार नहीं कर रही हैं.

और ऐसा करनेवाली गीसेल अकेली नहीं हैं. अरबपति जार्ज सोरोस के पूर्व पार्टनर जिम रोजर्स अपनी पूरी जायदाद और मकान बेच रहे हैं, ताकि वे पूरी संपत्ति चीनी यूआन में तबदील कर सकें. ताजमहल को देखना भी अब डॉलर के भरोसे संभव नहीं रहा. भारत के संस्कृति मंत्रालय ने घोषणा की कि विदेशी पर्यटकों से ताजमहल और अन्य ऐतिहासिक धरोहरों पर अब अमेरिकी डॉलर स्वीकार नहीं किये जायेंगे.

ईरान ने तेल के व्यापार से डॉलर को निष्कासित कर दिया है. ईरान के तेल मंत्री गुलाम हुसैन नोजारी के शब्दों में 'डॉलर अब एक गैर भरोसेमंद मुद्रा हो गया है.' वेनेजुएला के साथ मिल कर ईरान ने ओपेक देशों से डॉलर को कमजोर करने के लिए एक संयुक्त वक्तव्य की मांग की है.

रैप स्टार जेज्स के ताजा वीड्यिो अलबम में डॉलर की जगह यूरो दिखाया गया है. एयर बस ने पहले ही डॉलर के इस संकट को 'प्राणघातक' कहा है. फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी ने 'इकोनॉमिक वार' की चेतावनी दी है.

इसी अगस्त में कई देशों के केंद्रीय बैंकों और सरकारों ने अमेरिकी ऋण के अपने 3.8 प्रतिशत होल्डिंग्स को डंप कर दिया. बढ़ती बेरोजगारी और घरेलू गिरावटों के परिदृश्य में मंदी की ओर जाती अर्थव्यवस्था के बारे में लोगों को सशंकित कर रखा है और निवेशक देश छोड़ कर भाग रहे हैं. चीन, जापान और ताइवान इस बिक्री की रहनुमाई कर रहे हैं, जिसके कारण 1992 के बाद की सबसे तेज गिरावट पैदा हुई है. यहां तक कि अमेरिकी बांड, जो कि एक सुरक्षित निवेश समझे जाते थे, वे भी अमेरिकी डॉलर के लिए कोई मदद नहीं कर पा रहे हैं. उल्टे अमेरिकी बांडों के बारे में यह अवधारणा जोर पकड़ती गयी है कि वे अब सुरक्षित नहीं रहे. हालत यह है कि डॉलर गत 15 वर्षों के अपने सबसे निम्न स्तर तक चला गया है.

पहले विदेशी निवेश और करेंसी डिरेगुलेशन शेयर बाजार के लिए वरदान साबित हुए थे, जिन्होंने सस्ती पूंजी के नियमित प्रवाह को बढ़ाया था. मगर यह अमेरिका का दुर्भाग्य माना जा सकता है कि हमेशा जो चीज अच्छी दिखती है, वह वैसी नहीं होती. अंततः इन्हीं की वजह से शेयर बाजार औंधे मुंह गिरा. जानकारों का कहना है कि जब पूंजी का पलायन बढ़ेगा तो अमेरिका में ब्याज दरें बढ़ेंगी और इससे बेरोजगारी और अधिक बढ़ेगी तथा इन सबके परिणामस्वरूप डॉलर और अधिक गिरेगा. इससे बचा नहीं जा सकता.

विदेशी निवेशकों के पास अमेरिकी कर्जे के 4.4 ट्रिलियन से अधिक डॉलर बांडों और सेक्यूरिटीज के रूप में हैं. यदि वे इसका 25 प्रतिशत भी बेच दें तो अमेरिका में मुद्रास्फीति अमेरिकी अर्थव्यवस्था को डुबोने के लिए काफी होगी. पिछले दशकों में विदेशी निवेशकों ने अमेरिकी ट्रेजरी और इक्विटी खरीदने में काफी उत्सुकता दिखायी है. इससे हुआ यह कि अमेरिका के 800 बिलियन डॉलर का चालू खाता घाटा ढंक गया और डॉलर की तेज मगर एक नकली मांग बनी रही. अब वे उसे बेच रहे हैं. इससे सामान गिरवी रखनेवाले उस आदमी की तरह, जिसके रुक्कों का समय अचानक खत्म हो जाये, अमेरिका त्वरित भुगतान के बोझ तले दबा जा रहा है.

अमेरिका में बेरोजगारी किस कदर बढ़ रही है, इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि केवल अगस्त में, अमेरिका में सामान निर्माता उद्योगों में 64000 रोजगार घटे. कुल मिला कर अमेरिकी अर्थव्यवस्था ने चार लाख रोजगार खत्म किये हैं. इसके बरअक्स निजी क्षेत्र ने सिर्फ 24 रोजगार पैदा किये हैं. उसी माह सरकारी क्षेत्र में 28 हजार रोजगार खत्म हुए.

21वीं सदी में अमेरिकी अर्थव्यवस्था में निर्यात उद्योगों और उन उद्योगों में, जो आयात के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे थे, नये रोजगारों का पैदा होना बंद हो गया. अमेरिकी रोजगार घरेलू सेवाओं, खास कर खाद्य सेवाओं, निजी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और निर्माण तक ही सीमित हो गये. अमेरिकी मध्यवर्ग और उच्च मध्यवर्ग से जुड़े उच्च वेतनमान और उच्च

उत्पादकतावाले पेशों में रोजगार में कोई बढ़ोतरी नहीं होने से अमेरिकी उपभोक्ता बाजार लगभग खत्म हो गया है.

माल निर्माता उद्योगों में लंबे समय से गिरावट जारी है और अमेरिकी फर्मों में उत्पादन लगातार कम हुआ है. इससे इंजीनियरिंग प्रोफेशनों में भी गिरावट आयी है. प्रबंधन से जुड़े रोजगार मुख्यतया खुदरा व्यापार और वित्तीय सेवाओं तक सीमित हो गये हैं. फ्रेंचाइजी और शृंखलाओं ने स्वतंत्र पारिवारिक बिजनेसों के लिए अवसरों में कटौती की है.

अमेरिका का व्यापार घाटा 2006 में (अब तक के सबसे ताजा आंकड़े) 838,271,000000 डॉलर है. इसके बरअक्स यूरोप का व्यापार घाटा 142,538,000000 डॉलर, लैटिन अमेरिका का 112,579,000000 और कनाडा का 75,085,000000 डॉलर है.

आम तौर पर यह माना जाता है कि अमेरिका की सबसे अधिक निर्भरता तेल के लिए मध्यपूर्व पर है. मगर आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका इससे अधिक विदेशी औद्योगिक सप्लाइ और सामग्री के लिए आयात पर निर्भर है. अमेरिका का ओपेक के साथ व्यापार घाटा 106,260,000,000 डॉलर है जबकि विदेशी औद्योगिक सप्लाइ और सामग्री के लिए उसे 326,459,000,000 डॉलर के बराबर आयात करना पड़ता है. इससे पता चलता है कि अमेरिका ओपेक पर निर्भरता के मुकाबले इस आयात पर तीन गुना अधिक निर्भर है. अमेरिकी लोग विदेशी भोजन और पेय पर निर्भर हैं. इसके लिए अमेरिका को लगभग 8,975,000,000 डॉलर के बराबर आयात करना पड़ता है.

अमेरिका परिवहन के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर नहीं है. वह ऑटोमोटिव वाहनों, पार्ट्स और इंजिनों का आयात करता है. इसके लिए उसके 149,499,000,000 डॉलर खर्च होते हैं और यह अमेरिका की ओपेक पर निर्भरता से डेढ़ गुना अधिक है. इसी के साथ अमेरिका का वस्त्र, जूते और घरेलू उपयोग की सामग्री के क्षेत्र में व्यापार घाटा 336,118,000,000 डॉलर का है.

तो हम पाते हैं एक ऐसे सुपरपावर को, जो रोजमर्रा के जीवन की वस्तुओं में, मशीनरी, बिजली उत्पादक मशीनरी, मशीन टूल्स, कंप्यूटर्स और टेलिकम्यूनिकेशन उपकरणों तक में घाटा उठा रहा हो.

और इसका क्या मतलब है कि अमेरिका का व्यापार घाटा 800 बिलियन डॉलर है? इसका मतलब यह है कि अमेरिकी 800 बिलियन डॉलर का उपभोग कर रहे हैं, जबकि वे इससे कम का उत्पादन कर रहे हैं.

अमेरिका मुख्यतः अब एक कर्जदार देश बन गया है. जबकि वह अपने को एक ऋणदाता देश के रूप में प्रस्तुत करता रहा है. अमेरिका के पास जितनी विदेशी परिसंपत्तियां हैं, उनसे ढाई ट्रिलियन डॉलर अधिक अमेरिकी परिसंपत्तियां दूसरे देशों के पास हैं. जब विदेशी अमेरिकी परिसंपत्तियों का स्वामित्व हासिल करते हैं तो वे उससे भविष्य में होनेवाली आमदनी पर भी अधिकार बना लेते हैं. इसका मतलब होता है कि अमेरिकियों की आमदनी में और कटौती होती है.

अमेरिका की उत्पादन से अधिक उपभोग की प्रवृत्ति उसे अपने उपभोग को वित्तीय सहायता पहुंचाने के क्रम में और गहरे व्यक्तिगत ऋणों में धकेल देगी.

विदेशी अमेरिकी डॉलर को सामग्री और सेवाओं के बदले इसलिए स्वीकार करते हैं, क्योंकि डॉलर उनके विदेशी मुद्रा भंडार को व्यवस्थित करता है. अमेरिकी डॉलर के विश्व की रिजर्व करेंसी के रूप में बने रहने की क्षमता बढ़ते अमेरिकी बजट घाटे और व्यापार घाटे के चलते निरंतर घटती जा रही है. जिस दर पर दूसरे देश डॉलर प्राप्त करते हैं वह बहुत ज्यादा है उसे इसका बोझ कम करने के लिए दुनिया के अनेक देश अब दूसरी करेंसियों की ओर रुख कर रहे हैं.

अमेरिकी पूंजी का अमेरिका से बाहर निवेश होने और बुश द्वारा युद्ध पर किये जा रहे भारी खर्च के बीच मांग और आपूर्ति के सिद्धांत में विश्वास रखनेवालों को यह अभी आकलन ही करना है कि डॉलर की मांग में कमी डॉलर और अमेरिकी शक्ति को किस तरह डुबो रही है.

दुनिया भर के अर्थशास्त्री मान रहे हैं कि डॉलर का इस तरह लुढ़कते जाना नियंत्रण से बाहर हो सकता है. और अगर ऐसा हुआ तो अमेरिकी साम्राज्य का बने रहना असंभव हो जायेगा.

अगर हम थोड़ी कल्पना करने की इजाजत लें तो हम देखेंगे कि अमेरिका के लिए तब भारी मुश्किल पैदा हो जायेगी, जब उसका डॉलर विश्व मुद्रा के रूप में अपना अस्तित्व खो देगा. तब अमेरिका को विदेशों में स्थित अपने 737 सैनिक अड्डों के खर्च के लिए भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित करनी होगी. और अभी अमेरिका के 800 बिलियन व्यापार घाटे को देखते हुए यह असंभव लगता है. जब डॉलर रिजर्व करेंसी के रूप में नहीं रह जायेगा, विदेशी निवेशक अमेरिकी व्यापार और बजट घाटे में पैसा लगाना भी बंद कर देंगे.

2002 में, जबकि डॉलर का प्रभुत्व विश्व अर्थव्यवस्था पर सबसे अधिक था, के बाद से वह संयुक्त रूप से विश्व की शेष करेंसियों के मुकाबले 24 प्रतिशत नीचे गिरा है. अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में 0.75 प्रतिशत की कटौती के

बावजूद इसकी गिरावट जारी है. बढ़ी हुई मुद्रास्फीति से उबरने के लिए ब्याज दरों में कटौती की जाती है. मगर अब अमेरिका में यह मांग उठने लगी है कि डॉलर को विनाश से बचाने के लिए अभी और कटौती पर रोक लगायी जाये.

अमेरिकी सेंसस ब्यूरो के आंकड़े दिखाते हैं कि गत वर्षों में अमेरिकी राष्ट्रीय खर्च में भारी बढ़ोतरी हुई है. विश्व भर के देश रक्षा पर जितना खर्च करते हैं, उनमें से आधा अकेले अमेरिका करता है. अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद से दोगुनी रफ्तार से उसके कर्जे बढ़ रहे हैं और यह स्थिति पिछले 40 वर्षों से है. अमेरिकी क्रेडिट्स सरकारी ऋणों से भरने की प्रक्रिया में रक्षा मद में खर्च किये जाते हैं जो कि किसी भी तरह से उत्पादक संसाधनों में बढ़ोतरी नहीं करते. अमेरिकी ब्यूरो ऑफ इकोनामिकल एनालिसिस के आंकड़े बताते हैं कि भुगतान संतुलन (बैलेंस ऑफ पेमेंट) का बढ़ता हुआ घाटा कुल कर्जों के बराबर जा पहुंचा है और यह अमेरिका की खत्म होती अर्थव्यवस्था का एक और उदाहरण है. अमेरिकी भुगतान संतुलन में यह घाटा 1994 में शुरू हुआ था और 2006 में यह एक ट्रिलियन डॉलर हो गया था. अंततः स्थिति यहां तक पहुंची कि अमेरिका को घाटा पाटने के लिए अपनी संपत्तियां दूसरे देशों को हस्तांतरित करनी पड़ीं.

हाल के वर्षों में अमेरिका के आयात मूल्यों में वृद्धि हुई है. इसकी वजह से वहां आयातित वस्तुएं महंगी हुई हैं और इससे मुद्रस्फीति बढ़ी है. डॉलर की स्थिति में कमजोरी को इसने और बढ़ा दिया है.

डॉलर के कमजोर होने के इन घरेलू कारणों के बीच अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों ने भी डॉलर को किनारे करने में अपनी भूमिका अदा की है. यूरोपीय संघ एक शक्तिशाली संस्था बन गया है, जिसे कई विश्लेषक एक सुपर नेशन कहने लगे हैं. अपने 27 सदस्य देशों के साथ अभी यह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है. इसकी मुद्रा यूरो तोजी से डॉलर को रिप्लेस करती जा रही है.

अमेरिका इराक और अफगानिस्तान के दिशाहीन युद्ध में आकंठ फंसा हुआ है. इराकी और अफगानी जनता के शानदार प्रतिरोध ने अमेरिका के पांव अब भी वहां नहीं जमने दिये हैं. अमेरिकी जनरलों का कहना है कि मध्यपूर्व में छेड़े गये अमेरिकी युद्धों को जीतने के लिए अमेरिका को 10 साल खर्च करने पड़ेंगे. मध्य पूर्व में अमेरिकी सेना के पूर्व कमांडर जनरल जॉन एबीजैद ने कहा है कि अमेरिकी सेना को मध्यपूर्व छोड़ने में अभी और 50 साल लगेंगे.

मगर प्रेक्षकों का कहना है कि इसकी कोई संभावना नहीं दिखती कि अमेरिकी सेना आधी सदी तक मध्य पूर्व में रह पायेगी. डॉलर और अमेरिकी शक्ति पहले से ही पिछले पांवों पर हैं. और अब अमेरिका के पास उतना धन नहीं है कि वह बुश की हारी हुई लड़ाइयों पर खर्च करे. हम एक बार फिर कल्पना का सहारा लेते हुए कह सकते हैं कि हो सकता है कि बुश इसके लिए चीन से कर्ज लें.

बुश के युद्धों ने अमेरिकी कठपुतलियों के लिए खतरे पैदा कर दिये हैं. पाकिस्तान में मुशर्रफ न सिर्फ कमजोर हुए हैं बल्कि वे काफी हद तक अपने अस्तित्व की लड़ाई भी लड़ रहे हैं. बेनजीर भुट्टो की हत्या के तार निस्संदेह दक्षिण एशिया और मध्यपूर्व तक में अमेरिकी साम्राज्यवाद के हितों से जुड़े हुए हैं. इसमें मुशर्रफ ने एक सच्ची कठपुतली की भमिका अदा की है. आनेवाले दिन पाकिस्तान और पाकिस्तान से जुड़े अमेरिकी हितों के लिए कम खतरनाक नहीं होने जा रहे हैं.

इसी बीच अभी कुछ समय पहले यह खबर आयी थी कि ईरान के अलावा दुनिया के छह अन्य देश डॉलर का परित्याग करनेवाले हैं. इनमें दक्षिण कोरिया, वेनेजुएला, सूडान, चीन और रूस के साथ आश्चर्यजनक रूप से सऊदी अरब भी शामिल है. सऊदी अरब ने हाल में तब ब्याज दरों में कटौती से इनकार कर दिया, जब अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरें घटायीं. जानकारों का कहना है कि यह स्थिति अमेरिकी डॉलर के लिए एक विश्व मुद्रा के रूप में बेहद खतरनाक हालात पैदा करेगी. अमेरिका के साथ लेन-देन में अकेले सऊदी अरब की 800 बिलियन डॉलर की भागीदारी है. और अगर सऊदी अरब ने डॉलर का साथ छोड़ दिया तो यह मध्यपूर्व में डॉलर के लिए एक बड़ा झटका साबित होगा. पूरे मध्यपूर्व के साथ अमेरिका का 3500 बिलियन का लेन-देन है. दक्षिण कोरिया अगस्त में 100 मिलियन डॉलर बेच चुका है और ऐसी खबरें हैं कि वह एक बिलियन अमेरिकी बांड बेचनेवाला है. चीन के बारे में माना जाता है कि वह डॉलर को उड़ा देने की क्षमता रखता है. ब्राजील, वेनेजुएला, इक्वाडोर, बोलीविया अर्जेंटाइना, उरुग्वे, पराग्वे और कोलंबिया ने विश्व मुद्रा कोष और विश्व बैंक से अलग होने की घोषणा कर दी है. ये दोनों संस्थाएं अमेरिकी वित्तीय प्रभुत्व के औजार रही हैं. इन सबने दक्षिण अमेरिका में अमेरिकी दबदबे को खत्म कर दिया है. तो एक बार फिर हम, एक ऐसे साम्राज्य को पाते हैं जिसने अपने पिछवाड़े की जमीन खो दी है और कगार धंस रही है. क्या हम साम्राज्य के अंतिम संस्कार में शामिल होने की तैयारियां करें? जाहिर है, सवाल सिर्फ समय का है.

नवंबर, 2005 में दक्षिण कोरिया के मात्र इतना कहने से कि वह अपने विदेशी मुद्रा भंडार में कटौती करने की योजना पर विचार कर रहा है, डॉलर के इतिहास में सबसे बड़ी एकदिवसीय गिरावट आयी थी. उस समय द कोरिया के पास मात्र 69 बिलियन डॉलर का रिजर्व था. हम कल्पना कर सकते हैं कि चीन और जापान जैसे देशों, जिनके पास कुल मिला कर लगभग

एक ट्रिलियन डॉलर का विदेशी भंडार है, यदि डॉलर में कटौती पर विचार करें तो क्या हालत हो सकती है.

हम संकेतों को पढ़ सकते हैं. मध्यपूर्व में ताजा राजनीतिक-सैन्य गतिविधियों को देखें तो युद्ध को लेकर अमेरिकी उतावली और ईरान के खिलाफ नये सिरे से और तेज लामबंदी का डॉलर के इस घटते प्रभुत्व से भी संबंध है. 2003 में इराक पर सारी दुनिया की जनता के प्रतिरोध को नजरअंदाज करते हुए थोपे गये युद्ध के पूर्व भी ऐसी ही स्थिति थी. तब सद्दाम हुसेन ने अपने 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर के भंडार को यूरो में बदल दिया था और उसकी देखा-देखी कई और देश इस राह पर जाने को तैयार थे.

1970 के बाद से जारी वैश्विक मंदी से निकलने के लिए किये गये सारे उपाय असफल साबित हुए हैं. उल्टे संकट और सघन हुआ है. लैटिन अमेरिका, एशिया और अफ्रीका में जनता के तेज होते प्रतिरोध संघर्षों के बीच उसका संकट और बढ़ेगा ही.

...और जाहिर है, ऐसे में 'द इकोनॉमिस्ट' के लिए राहत भरे दिन लंबे समय तक नहीं नहीं रहनेवाले हैं. रोमन साम्राज्य अपनी किस्मत आप खत्म हुआ था, मगर इसमें सदियां लगी थीं. बुश ने अमेरिका को महज सात तुच्छ वर्षों में खत्म कर दिया.